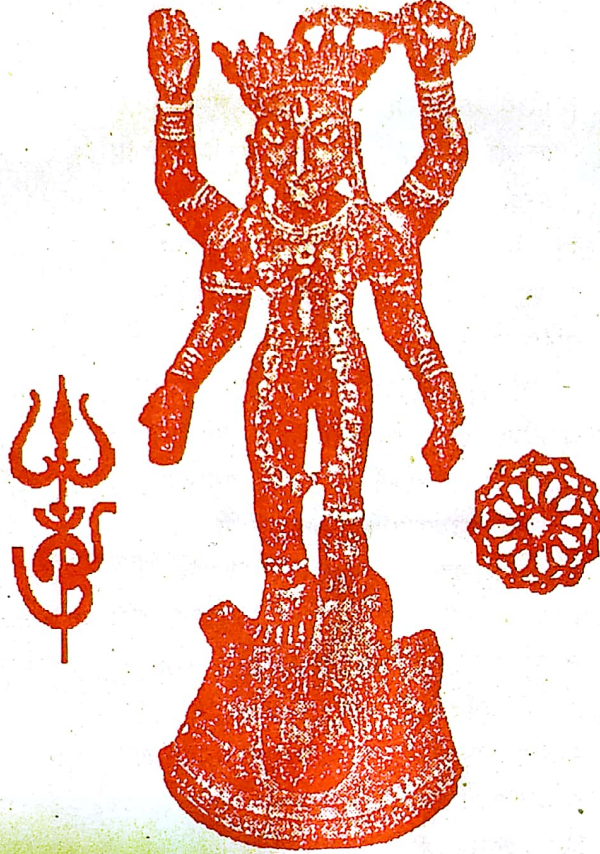




॥ आद्यास्रोत्रम् ॥



बशिष्ट महाराज मंदिर

बैशनव नगर कॉलोनी
छितरपुर, पी.एस. : लंका
पो.ऑ. : बी.एच.यू. - 221005
वाराणसी, उ.प्र. भारत

मोबाइल : 09919173078, 9007651168

स्वामी देवानन्द महाराज मठ

(देवानन्द महाराज ट्रस्ट)

229/1, बोसपुकुर प्रान्तीय पल्ली, कसबा
कोलकाता-700 078

(बोसपुकुर शीतला मन्दिर के निकट)

मोबाइल : 9007651168 / 8697449543

प्रचारित -- श्री बशिष्ठ महाराज

शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि आद्यास्त्रोत्रं महाफलम्।
 यः पठेत् संतं भक्ता स एवं विष्णुवल्लभः॥
 मृत्युव्याधि भयं तस्य नास्ति किञ्चित् क्लौयुगे।
 अपुत्रा लभते पुत्र त्रिपक्षं श्रवण यदि॥
 दो मासौ बंधनान्मुक्तिप्रवृत्तात् श्रुतं यदि।
 मृतवस्या जीववस्या पऽमासम् श्रवणं यदि॥
 नौकायां संकटे युद्धे पठनाज्जयमाप्नुयात्।
 लिखित्वा स्थापयत् गेहे नग्नि चौर भयं कच्चित्॥
 राजस्थाने जयी नित्यं प्रसन्ना सर्व देवता।
 ॐ ह्रीं ब्रह्माणी ब्रह्मलोके च बैकुण्ठे सर्वमंगला॥
 इन्द्राणी अमरावत्यां अम्बिका बरुणालये।
 यमालये कालरुपा कुवेर भवने शुभा॥
 महानन्दा अग्निकोने च वायव्यां मृगवाहिनी।
 नैऋत्यां रक्तदन्ता च ऐशान्यां शूलधारिणी।
 पाताले वैष्णवीरुपा सिंहले देजवमोहिनी।
 सुरसा च मणिदीपे लंकया भद्रकालिका॥
 रामेश्वरी सेतुबन्धे बिमला पुरुषोत्तमे।
 बिरजा औङ्गदेशे च कामाक्षा नील पर्वते॥
 कालीका बंगदेशे च अयोध्याया महेश्वरी।
 वाराणस्यां अन्नपूर्णा गया क्षेत्रे गयेश्वरी॥
 कुरुक्षेत्रे भद्रकाली ब्रजे कात्यायनि परा।
 द्वारकायां महामाया मथुरायां महेश्वरी॥
 क्षुधा त्वं सर्वभूताना बेला त्वं सागरस्य च।
 नवमी शुक्लपक्षस्य कृष्णस्येकादशी परा॥
 दक्षस्य दुहिता देवी दक्षयज्ञविनाशिनी।
 रामस्य जानकी तत्त्वं ही रावणध्वंसकारिणी॥
 चण्डमुण्डवधे देवी रक्तबीजविनाशिनी।
 निशुम्भशुर्भमथनी मधुकैटभधातिनी॥
 विष्णुभक्तिप्रदा दुर्गा सुखदा मोक्षदा सदा।
 आद्यास्तवमिमं पुण्यं यः पठेत् सततं नरः॥
 सर्वज्वरभयं न स्थात् सर्वव्याधिविनाशनम्।
 कोटितीर्थफलं तस्य लभते नात्र संशयः॥
 जया मे चाग्रतःपातु विजया पातु पृष्ठतः।
 नारायणी शिपदेशे सर्वांगे सिंहवाहिनी॥
 शिवदूतो अग्रचण्डा प्रत्यंगे परमेश्वरी।
 विशालाक्षी महामाया कौमारी शंखिनी शिवा॥
 चक्रिणी जयदात्री च रणमत्ता रणप्रिया।
 दुर्गा जयंती काली च भद्रकाली महोदरी॥
 नारसिंही च वाराही सिद्धिदात्रि सुखप्रदा।
 भयंकरी महारौद्री महाभयविनाशिनी॥

इति ब्रह्मयामले ब्रह्मनारदसंवादे आद्यास्त्रोत्रं समाप्तम्।

आद्यस्रोत्र अनुवाद

हे वत्स, महाफलदायक आद्यास्तव कहती हूँ सुन लो। जो सदा भक्तियुक्त होकर इसे पढ़ते हैं वे सदा विष्णु के प्रिय होते हैं। इस कलियुग में उन्हें मृत्यु और रोग का कोई भय नहीं रहता। अपुत्रा इसे तीन पक्ष तक श्रवण करने से पुत्र प्राप्त करती है। ब्राह्मण के मुँह से दो महिने श्रवण करने से सांसारिक बंधनों से मुक्ति मिलती है। छह महिने श्रवण करने से मृतवत्सानारी जीववत्सा होती है। इसे पाठ करने से नाव में संकट में और युद्ध में जीत प्राप्त होती है, लिखकर घर में रखने से आग अथवा चोर का भय नहीं रहता, राजस्थान में सदा जीत होती है और सब देवता प्रसन्न होते हैं। हे माँ तुम ब्रह्मलोक में ब्रह्माणि बैकुण्ठ में सर्वमंगला, अमरावती में इन्द्राणी, वरुनालय में अम्बिका, यमालय में कालरूपा, कुवेर भवन में शुभा, अग्निकोण में महानन्दा, वायुकोण में मृगवाहिनी नैऋतकोण में रक्तदन्ता, ईशानकोण में शूलधारिणी, पाताल में वैष्णोरूपा, सिंहल में देवमोहिनी, मणिदीप में सुरसा, लंका में भद्रकाली, सेतुबांध में रामेश्वरी पुरुषोत्तम (पुरी में बिमला, उड़िसा में विरजा, नीलपर्वत में कामक्षा, बंगदेश में कालिका, अयोध्या में महेश्वरी, बनारस में अन्नपूर्णा, गयाक्षेत्र में गयेश्वरी, कुरुक्षेत्र में भद्रकाली, ब्रज में कात्यायनि, द्वारका में महामाया, मथुरा में माहेश्वरी हो।

हे माँ तुम सारे जीव में श्रद्धास्वरूपा समुद्र के तट हो,

तुम हो शुक्ल पक्ष की नवमी एवं कृष्णपक्ष की एकादशी तुम दक्ष की दक्षयज्ञ विनाशिनी कम्पा, तुम रावण ध्वंसकारि राम की जानकी, तुम चण्डमुण्ड बधकारिणी देवी एवं रक्तबीज विनाशिनी हो। तुम निशुम्भ और शुम्भ की बधकारिणी हो और मधुकैटभ की घातिनी हो। तुम विष्णुभक्ति प्रदायिनी सदा सुख प्रदायिनी दुर्गा हो।

जो मनुष्य इस पावन आद्यास्तव का पाठ करते हैं उसे समस्त प्रकार की रोग का डर नहीं रहता, एवं समस्त रोग विनाश प्राप्त होते हैं। उसे कोटि तीर्थ का फल मिलता है इसमें कोई संदेह नहीं है। जया मेरे सामने का अंश एवं विजया मेरे पीछे का अंश, नारायण मेरे सिर का अंश एवं सिंहवाहिनी मेरे सारे अङ्ग की रक्षा करती है। शिवदूती उग्रचण्डा परमेश्वरी, विशालक्ष्मी महामाया कौमारी शांखिनी, शिवा, चक्रिणी, जयदात्रि, रणमता, रणप्रिया, दुर्गा जयन्ती काली भद्रकाली महोदरी नारसिंही वाराहि, सिद्धिदात्री, सुखप्रदा, भयंकरी, महारौद्री महाभय विनाशिनि, मेरे सारे प्रत्यंगों की रक्षा करे यही मेरी विनती है।

अतं में ब्रह्मयामके ब्रह्मनारद संवाद में आद्यास्रोत्र समाप्त होती है।

: प्रणाम :

ॐ अच्युतं केशवं विष्णुं हरिसत्यं जनार्दनम्।
हंस नारायणंचैव एतन्नामाष्टकं शुभम्॥
ॐ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दशितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥
गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरुदेवौ महेश्वर।
गुरुदेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥
अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानां जनशकाकया।
चक्षुरुन्मोलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥
ॐ सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते।
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणी नमोऽस्तुते॥
शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे।
सर्वस्यातिहरि देवि नारायणी नोस्तते॥
जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा शिवा क्षमा घात्री स्वाहा स्वाधा नमोऽस्तुते॥
ॐ कालि! कालि ! महाकालि! कालिके परमेश्वरी।
सर्वानन्दकरे देवि नारायणी नमोऽस्तुते॥
ॐ महादेवं महात्मानां महायोगि महेश्वरम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः॥
ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय श्रीकृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥
नमस्ते जलदाभास! नमस्ते जलशायिने।
नमस्ते केशवानन्द! वासुदेव! नमोऽस्तुते॥
हे कृष्ण! करुणासिन्धो! दीनबन्धो! जगतपते।
गोपेश! गोपिकाकान्त! राधाकान्त नमोऽस्तुते॥
(श्री श्री रामकृष्णनाम)
(किर्तन के लिए)
नमो रामकृष्ण रामकृष्ण कृष्णरामचन्द्राय।
नमः कृष्णरामचन्द्राय नमो रामकृष्णदेवाय॥
नमोः युग अवतार नमः सर्वदेव देवाय।
नमः सर्वधर्म समन्वय — सर्वभावरक्षाय॥

अन्नदाठाकुर

: स्मरणीय :

क्षणमिहं चिन्तय मानवनिचय संसार सुखदुःखभोगम्।
कथमपि धनजनमाश्रयमनुदिन नास्ति ते खलु प्रेमलेशम्॥
पश्यतु विपिने क्षिति तल शयने कस्य हृदयप्रेमरत्नम्।
विगलितनयनं विरहित भूषणमाश्रय विहिन विरागम्॥
इह खलु भवनं परिजन पोषणं नाहि सुखभोग चानुभागम्।
मोहमाया सेवितं जरायमभूषितं विजड़ित शोकपापतापम्॥
भावय नित्य प्रेमिकरत्न्यं भावपारावार पारहेतुम्।
वृथा कालयापनं माँ कुरु सज्जन! नहि नहि सुधी समुचितम्॥

— अन्नदाठाकुर